नव वर्ष भवदीय अभ्युदय में सहायक हो ।

शुभाकांक्षी

शिव कुमार मिश्र

31/12/2024

किंतु अभ्युदय का अर्थ क्या है ?

<u>अभ्युदय और सिद्धि</u>

जिससे बढ़ती हो निर्बलता

और पराश्रय भाव ।

नव आवरण सृष्टि जो करता

बढ़ता तृषा प्रभाव ।

जिससे अहम वृद्धि को पाता

भासित रिपु सम अन्य ।

जिससे पा असार संग्रह नर

निज को पाता धन्य ।।1।।

आभासी उत्कर्ष मात्र भ्रम

क्षेपण मनकृत छल का ।

दुष्प्रयोग मति का क्षति दायक

ज्ञापक बस पशुबल का ।

निज से भी भयभीत करेगा

क्या कुछ क्षेम जगत का ।

ज्ञात न जिन्हें अतीत संवारेंगे

क्या वपु आगत का ।।2।।

ज्ञात नहीं गंतव्य अश्रुत पथ

अनुभव विरहित नायक ।

और अशासित बली अश्वगण

शित निषंग में सायक ।

आकर्षण बहु और पंथ के

द्वंद्व दूसरे दल से ।

मात्र उपद्रव बन जाती है

यात्रा परितः छल से ।।3।।

निज बल का अज्ञान और यह

दिग्भ्रम पड़ता भारी ।

प्रथम बिंदु पर पुनः लौटते

जो थे फल अधिकारी ।

काम न आ पाते संसाधन

जय सुख स्वप्न बिखरते ।

क्या विरमित होता असारहित

घन श्रम करते करते ।।4।।

अतः कामना यही अर्थ सब

जानें निःश्रेयस का ।

कौन यथार्थ अभ्युदय पाता

यहां पथिक प्रेयस का ।

सकल साधना सार लक्ष्य से

क्रमिक घटाना दूरी ।

जो घर तक पहुंचा न सके वह

यात्रा परम अधूरी ।।5।।

बहुत काल से हमें ज्ञात था

अपना शुभ गंतव्य ।

शतशः प्रज्ञ कर गए घोषित

यहां सत्य मंतव्य ।

जिससे हो अभ्युदय और हो

निःश्रेयस की सिद्धि ।

वह पथ ही है धर्म जहां हो

दैवी निधि की वृद्धि ।।6।।

वही अभ्युदय ले जाता जो

क्रमिक पूर्णता ओर ।

त्यक्त कालिमा सा नभ दिखता

होता सा कुछ भोर ।

छिटकाती अरुणिमा विभा फिर

प्रकटित होता अर्क ।

वह निःश्रेयस सिद्धि जहां सब

शमित उपद्रव तर्क ।।7।।

पंडित शिव कुमार मिश्र

31/12/2024

कानपुर